International Research Journal ISSN-0975-3486 RNI : RAJBIL 01488 VOL. I * ISSUE—3

शोध पत्र

Dec.-09—Jan.-2010

कन्या भ्रूण हत्या एवं नवजात कन्या हत्या का तात्विक विश्लेषण

[मुरैना तहसील के विशेष संदर्भ में]

* डॉ. रंजना दीक्षित

* सहायक प्राध्यापक, माधव महाविद्यालय, ग्वालियर

तहसील मुरैना ग्वालियर उच्च भूमि पर जिला मुरैना के मध्य पूर्व में स्थित है जिसके उत्तर में चंबल नदी,, दक्षिण में ग्वालियर जिला,, पूर्व में अम्बाह तहसील तथा पश्चिम में जौरा तहसील है। चंबल एवं उसकी सहायक नदियों से निर्मित बीहड, कछार एवं खदानें यहाँ की प्राकृतिक विशेषतायें हैं। विषम जलवायु अर्थात बार्षिक तापान्तर की अधिकता एवं न्यून वर्षा के कारण ज्वार बाजरा एवं मक्का का उत्पादन होता है लेकिन इसके साथ ही सिचाई सुविधाओं के कारण गेंहू एवं सरसों का उत्पादन प्रमुखता से किया जाता है। कृषि एवं पशु पालन ग्रामीण क्षेत्रों का मुख्य व्यवसाय है। तहसील के दक्षिणी भाग में खनन व्यवसाय भी किया जाता है। जिला मुख्यालय होने के कारण यहाँ दो नगरीय क्षेत्र बामौर एवं मुरैना है जिनमें 32 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है शेष 68 प्रतिशत जनसंख्या लगभग 180 ग्रामों में निवास करती है।

जनगणना 2001 के अनुसार अध्ययन क्षेत्र में लिंग अनुपात 806 है जो मध्य प्रदेश की न्यूनतम अनुपात की दूसरी तहसील है। तहसील के 64 प्रतिशत से अधिक ग्राम तहसील के औसत अनुपात से कम है तथा लगभग 32 प्रतिशत ग्राम ही औसत से अधिक है। यहाँ के तीन ग्राम 600 से कम, 21 ग्राम 700 से कम, 90 ग्राम 800 से कम, 60 ग्राम 900 से कम, 3 ग्राम 1000 से कम लिंग अनुपात के हैं केवल एक ग्राम 1000 से अधिक लिंग अनुपात वाला है। 0 से 6 आयु वर्ग में लिंग अनुपात केवल 810 है जो जिल की समस्त तहसीलों में न्यूनतम है।

इस वर्ग के 40 प्रतिशत से अधिक ग्राम तहसील के औसत अनुपात से कम हैं तथा 60 प्रतिशत औसत से अधिक हैं। कुछ ग्रामों में प्रति 1000 बालकों पर बालिकाओं की संख्या 500 और इससे भी कम हैं। द्वितीयक आकडों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह संकल्पना निर्मित की गई कि–

विषम लिंग अनुपात प्राकृतिक न हो कर मानवीकृत है अर्थात विभिन्न कारणों से बालिकाओं एवं महिलाओं की अधिक मत्यु होती है जैसे –;

कुपोषण, उपेक्षापूर्ण व्यवहार, स्वास्थ सुविधाओं की कमी , नवजात कन्या हत्या एवं कन्या भ्रूण हत्या प्रसवकालीन एवं प्रसवोपरांत मातृ मृत्यु एवं अविवाहित युवकों की बडती संख्या।

संकल्पना के परीक्षण के लिये 5 ऐसे ग्रामों का प्रतिचयन किया गया जो तहसील में कुल जनसंख्या एवं 0 से 6 आयु वर्ग में सर्वाधिक विषम लिंग अनुपात वाले थें। इस कार्य के लिये एक साक्षात्कार अनुसूची को भरवाया गया जिसमें लगभग 45 सरल प्रश्न रखे गये। इसके अतिरिक्त अन्य युवकों, युवतियो, महिला एवं पुरुषों से समस्या पर वार्तालाप कर विचार एकत्र किये गये। आँगन वाडियों, महिला पर्यवेक्षकों से भी समस्या के कारण एवं सुझाव एकत्रित किये गये। सर्वेक्षण कार्य के लिये चयन किये गये ग्रामों की सूची–

	ग्राम	लिंग अनुपात	0–6 आयु वर्ग में लिंग अनुपात
1.	डोलसा	470	205
2.	उरहाना	575	442
3.	बारे का पुरा	631	486
4.	भटपुरा नोडी	677	472
5.	भैंसौरा	650	554

मनचित्र क्रमांक – 2 से स्पष्ट है कि सर्वाधिक विषम अनुपात के पाँचों ग्राम तहसील के दक्षिण पूर्व में स्थित है। शोध क्षेत्र के पूर्व में भिंड जिले की गोहद तहसील पश्चिम में जौरा तहसील तथा दक्षिण में जिला ग्वालियर स्थित है। गोहद, मुरैना एवं जौरा म0 प्र0 की न्यूनतम स्त्री अनुपात की क्रमशः प्रथम द्वितीय व तृतीय स्थिति वाली तहसीलें हैं। इस प्रकार से राज्य का यह भाग सामाजिक दृष्टि से संक्रमित क्षेत्र है। संबन्धित ग्रामों की ऑगनवाडियों के अनुसार चार ग्रामों में

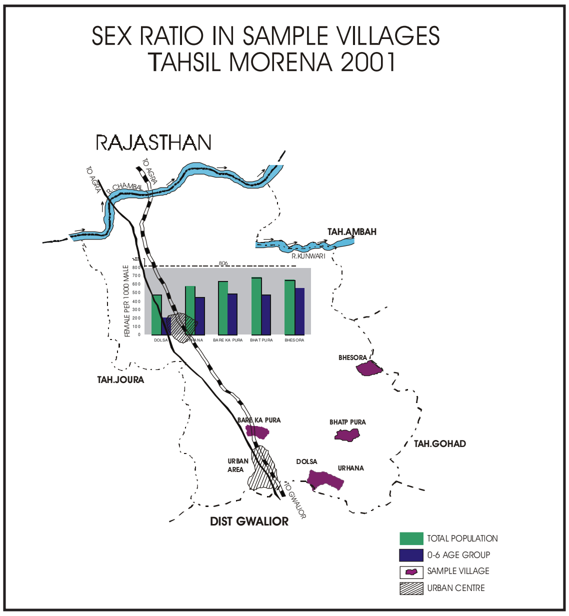

गुर्जर जाति तथा एक ग्राम में हरिजन व मुसलमान प्रमुख हैं। यहाँ प्रमुख व्यवसाय कषि, खनन, पशुपालन मजदूरी एवं चोरी करना आदि हैं।

सर्वेक्षण उपरांत शोध क्षेत्र में समस्या से सम्वन्धित कुछ प्रमुख तथ्य इस प्रकार हैं–

1. शोध क्षेत्र के निकटवर्ती नगरीय क्षेत्रों में भ्रूण परीक्षण सुविधा उपलब्ध है। 2. भ्रूण परीक्षण उपरांत कन्या भ्रूण की हत्या सफाई के नाम से प्रचलित है। 3. नवजात कन्या हत्या जारी है जिसमें तम्बाकू का प्रयोग मुख्य है। 4. स्थानीय लोगों में इस कार्य को लेकर कोई ग्लानि या पछतावा नहीं है। 5. लडकियॉं तथा महिलाऐं स्वंय ही पुत्र तो 5–6 चाहती हैं। पर पुत्री 1 या 2 से अधिक बिल्कुल नहीं । 6, प्रसव कालीन महिला मृत्यु दर बहुत कम है। क्योंकि सरकार द्वारा नगद लाभ देने से सभी प्रसव अस्पताल में होते हैं। 7. सर्वेक्षित क्षेत्र में अन्न व दूध की कमी नही है। अतः कुपोषण लगभग नहीं है। 8. साक्षरता वास्तविक न होकर कागजी अधिक है। 9. निवासियों में कुछ स्वभावगत विश्षेताऐं है। जैसे–जल्दी ही उत्तेजित होना; दूसरे की वस्तु या संपति हड़प लेना। छोटी छोटी बातों पर बन्दूकों लाठियों का खुलकर प्रयोग। 10. बेटा और बंदूक जीवन के लिये स्वाभिमान के लिये अत्यावश्यक हैं।यह परिवार की शान व शक्ति भी हैं जबकि बेटियॉं असुरक्षा व कमजोरी हैं। 11. बेरोजगार एवं अल्प शिक्षित युवकों की टोलियॉं हर जगह हैं जो एक बडी समस्या है। अध्ययन क्षेत्र में समस्या का कारण केवल मानसिक प्रवषति है। साक्षात्कार अनुसूची में 100 प्रतिशत ने लड़कियॉं न चाहने का कारण दहेज बताया। दूसरा कारण लड़केवालों को हमेशा देते रहो एवं दबते रहो बताया। तीसरा कारण लड़कियॉं पराई अमानत हैं कम हो तो ठीक है। बेटियों की सुरक्षा करना भी आवश्यक है। इसी प्रकार अन्य कारण बताये गये।

अध्ययन के निर्ष्कष में कुछ सुझाव निम्नानुसार हैं –1. .स्थानीय लोगों की सोच एवं मनोवृति में परिर्वतन अत्यावश्यक है। जिसके लिये साक्षारता का विस्तार विषेष रुप से महिलाओं के लिये किया जाये। 2. धार्मिक गुरुओं के द्वारा पुत्र और पुत्री में समानता रखने एवं उन्हें जीवित रखने के लिये दबाव बनाया जाये। 3. महिलाओं को शिक्षा एंव रोजगार की व्यवस्था एक साथ हो। 4. युवकों को स्वरोजगार के लिये क्षेत्रीय स्तर पर प्रशिक्षण दिया जाये एंव उद्योगों को ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित किया जाये। 5. आवागमन के साधन पर्याप्त हों। 6. ऑगनबाड़ियों को विशेश ट्रेनिंग के द्वारा प्रषिक्षण दिया जाये ताकि वे नवजात कन्या हत्या एंव कन्या भ्रूण हत्या के मानसिक बदलाव में सहायक हो। 7. लाड़ली लक्ष्मी योजना को कुछ शर्तों में कुछ छूट दी जाये ताकि अन्य संभागों की भांति इस संभाग में भी इसके हितग्राही बढ़ सके। 8. अध्ययन क्षेत्र विशिष्ट क्षेत्र घोषित किया जाये। ताकि शीघ्रता: से लिंगानुपात संतुलित हो सके।

अन्त में, समस्या को दूर करने के लिये उपरोक्त सुझावों में से योजनाऐं बनानी होंगी। योजनाओं के बनाने और लागू होने से अधिक आवश्यक है उनका वास्तविक रुप में कार्यरत होना। राजनीतिक प्रभावों को इन योजनाओं से दूर रखना आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1.मध्य प्रदेश प्रशासनिक एटलस 2001 शासकीय प्रकाशन
2.भारत की जनगणना मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगण 2001 साहित्य भवन प्रकाशन आगरा?
3.सामाजिक सर्वेक्षण अनुसंधान एवं सांख्यकीय
4. Primary Census Abstract Census of India 2001 Data Product No-0061-2001 Cen CD Ragistrar Genral India